ISSN 2278-8808 SJIF 2014 = 4.889
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL
FOR INTERDISCIPLINARY STUDIES

शोध–पत्र

'महाकवि कालिदास के रघुवंश महाकाव्य में वर्णित शैक्षिक विचारों का अध्ययन'

*वन्दना सोनी (शोधार्थी)

प्रस्तावना

आधुनिक काल में परिवर्तन की गति बहुत तीव्र है। प्रगति का अर्थ है – परिवर्तन! परिवर्तन यदि सकारात्मक हो तभी सराहनीय है। परिवर्तन हेतु सार्थक एवं तर्क संगत प्रतिबलन रघुवंशमहाकाव्य की शिक्षा द्वारा दिया जा सकता है। रघुवंश महाकाव्य के संदेशों से शिक्षा प्राप्त कर हम जीवन विरोधी तत्वों को न पनपने देने के लिए एवं नवीन मूल्य आधारित शिक्षा देकर समाज को प्रगति की ओर अग्रसर कर आदर्श स्थापित कर सकते है। रघुवंशमहाकाव्य हमारे अहंकारी को नष्ट करके ऐसा आत्मविश्वास भरता है कि व्यक्ति शिक्षा का वास्तविक स्वरूप पहचानकर उन्नति के पथ पर अग्रसर होता चला जाता है। वर्तमान समय में मानव विकास में जो सबसे बडी बाधा है, वह है उसका –''अन्तर्द्वन्द्व''! रघुवंश महाकाव्य इस द्वन्द्व जो दूर कर मानसिक शान्ति प्रदान करने का प्रयास करता है।

रघुवंश महाकाव्य के अनुसार ज्ञान कहीं बाहर से नही आता वह व्यक्ति के भीतर ही छिपा रहता है। यदि मनुश्य के हदय के आवरण को हटा दिया जाए तो मनुष्य को सब प्रकार का भौतिक तथा अधिभौतिक ज्ञान प्राप्त हो सकता है। और ज्ञान की अनुभूति के लिए ध्यान को केन्द्रीत करना अति आवश्यक है। रघुवंशमहाकाव्य की शिक्षा मनुष्य के चिन्तन व मनन पर बल देकर उसे प्रेरणा प्रदान करती है।

छात्र एवं शिक्षक को कर्तव्य का मार्ग दिखाने के लिए आवश्यक है कि हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली में प्राचीन संस्कृति के महत्व का उद्घोश करने वाले रघुवंश महाकाव्य जैसे ग्रन्थ सम्मिलित

किये जाये। रघुवंश महाकाव्य के शैक्षिक विचारों को आत्मसात करने के लिए महाकवि कालिदास ने इस बात पर बल दिया है कि उसे केवल धार्मिक पुस्तक की तरह पढ़कर रहने से ज्ञान की प्राप्ति सम्भव नही है। रघुवंश के माध्यम से महाकवि कालिदास ने जो सन्देश दिया है। उसके केन्द्रीय भार को समझकर वास्तविक अर्थ को प्रकाश में लाने के लिए रघुवंश महाकाव्य की शिक्षा अपरिहार्य है।

Scholarly Research Journal's Is Licensed Based On A Work At Www.Srjis.Com

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :–

रघुवंश महाकाव्य को पढ़कर इसका अनुसरण तो प्रारम्भ से किया जाता रहा है। पर इसमें दिये गये ज्ञान एवं शिक्षा के आदर्शे का अनुसरण करने का प्रयास नही किया गया है। रघुवंश महाकाव्य के ज्ञान को प्रकाश में लाने की आवश्यकता इसलिए भी अनुसरण की गई है कि मनुष्य का जीवन उदेश्यपूर्ण और उपयोगी तभी बन सकता है। जब हम रघुवंश महाकाव्य के व्यावहारिक पक्ष को समझे। रघुवंश महाकाव्य जीवन का एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जिससे हमें यथार्थ का सिद्वान्त प्राप्त होता है। रघुवंश महाकाव्य के अध्ययन की आवश्यकता पर ध्यान इसलिए भी आकृष्ट हो जाता है। क्योकि इस क्षेत्र में हुए शोघकार्य की संख्या अति न्यून है कालिदास जी द्वारा प्रतिपादित सिद्वान्तों एवं आदर्शो की व्याख्या कर समाज के सामने प्रस्तुत करने की महती आवश्यकता है।

यदि हम रघुवंश महाकाव्य के बताये हुए मार्ग पर चले तो हम एक ऐसी नई सामाजिक व्यवस्था का निर्माण कर सकते है। जिसमें मानव की उच्चतम आकांक्षाऐ और नवीन आशाएँ साकार हो सकती है। रघुवंश महाकाव्य का अध्ययन कर मानव के सामने यह आदर्श प्रस्तुत किया जा सकता है कि वास्तविक जीवन का उद्देश्य कर्म करने में है, जीवन संघर्ष से बचने में नही है। रघुवंश महाकाव्य द्वारा यह ज्ञान प्राप्त होता है कि केवल शिक्षा प्राप्त करने से ही किसी उद्देश्य की पूर्ति नही हो सकती, अपितु उस शिक्षा का सही समय पर सही स्थान पर प्रयोग करने की कला भी आनी चाहिए। आज रघुवंश जैसे दिव्य ग्रन्थ की शिक्षाओं को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है जो समाज को हिलाकर उसकी निष्क्रियता की तन्द्रा दूर कर उसे ऊर्जास्विता द्वारा नया जीवन दे सके।

रघुवंश महाकाव्य में निहित सिद्वान्त व नैतिकता वर्तमान युग में मानव को वैज्ञानिक व तकनीकी उन्नति से वंचित नही करती, इसके विपरित वह उसे लक्ष्य की ओर ले जाती है। अतः इसका

अध्ययन करने से हम शिक्षा की व्याख्या कर मानव के व्यक्तित्व का विकास कर सकते है। रघुवंश महाकाव्य अन्य ग्रन्थों की तरह केवल आत्मा–परमात्मा की बड़ी–बड़ी बाते न करके सामान्य व्यक्ति के जीवन के सम्बन्धित आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत करता है। वस्तुतः रघुवंश महाकाव्य का ज्ञान जीवन और जगत के तथ्य और तर्क पर आधारित है।

अध्ययन का औचित्य : –

जब कोई अनुसधांन कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता , महत्व, प्रकृति आदि का औचित्य स्पष्ट करना इसलिए आवश्यक है कि हम इसके द्वारा यह सिद्व कर सके कि अनुसंधान के परिणाम का निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेगे। वर्तमान भौतिक युग में शिक्षा, छात्र, अभिभावक और अध्यापक सभी का स्वरूप बदल गया है। आज अशान्ति और भय का वातावरण निर्मित हो रहा है। उसके उतरदायित्व से वर्तमान भौतिकवाद बच नही सकता, चाहे वह मानव जाति के कल्याण की कितनी ही बाते क्यों न कर ले। उसके द्वारा मनुष्य में अपने अन्दर की पाश्विक वृतियों का जितना विकास किया, उतना ही मनुष्य के अन्दर के देवत्व का हनन भी गया है, आज हम अपने विकास की सही दिशा से विमुख है। अतः जिस समाज में हम रहते है, उसे सही मार्ग की राह दिखाना हमारा परम कर्तव्य है।

आज का मानव यह समझने की भूल कर बैठा है कि वैज्ञानिक उन्नति जीवन का चरमोत्कर्ष है, जबकि हम दर्शन–शास्त्र का अध्ययन करते है तो देखते है कि यह केवल जीवन का एक पहलू है। जीवन का एक अन्य पक्ष आध्यात्मिक भी है, दोनो के सामांजस्य से ही जीवन का समुचित विकास हो सकता है। व्यक्ति की इस भूल को सुधार कर उसे सही राह की ओर अग्रसर करने का प्रयास प्रस्तुत शोध के महत्व को दर्शाता है।

आज का मानव वैज्ञानिक उन्नति को जीवन का चरमोत्कर्ष मानता है। जबकि दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट जाहिर होता है कि यह केवल जीवन का एक पहलू है। जीवन का एक अन्य पक्ष आध्यात्मिक भी है, दोनो के सामांजस्य से ही जीवन का समुचित विकास हो सकता है। व्यक्ति की इस भूल को सुधार कर उसे सही राह की ओर अग्रसर करने का प्रयास प्रस्तुत शोध के महत्व को दर्शाता है। समाज के सामने यह प्रस्तुत करना कि रघुवंश महाकाव्य के शैक्षिक विचारों को अपनाकर व्यक्ति मानसिक अशांति को दूर करके व्यक्तित्व का चँहुमुखी विकास कर सकता है। वर्तमान में शिक्षा का सकारात्मक पक्ष अस्ताचल की ओर अग्रसर है। तथा पाश्चात्य शिक्षा उदयाचल की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो रहे है। ऐसी स्थिति में शैक्षिक विचारों के पुनः

उद्भव और भावी पीढ़ी में इसके प्रसार पर गम्भीरता से विचार करने हेतु रघुवंश महाकाव्य के विचारो को आत्मसात् कर व्यवहार में प्रयोग आत्यावश्यक है। रघुवंश महाकाव्य को शिक्षा का अमरकोश मानकर मार्ग दर्शन प्राप्त करना वर्तमान की प्रमुख आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्य : –

अध्ययन का उद्देश्य होता है कि शोध से प्राप्त वास्तविकता को समाज के दृष्टिपटल पर रखा जाए जिससे छात्र, अध्यापक, समुदाय तथा राष्ट्र का एक सही एवं उचित मार्गदर्शन हो।

1. रघुवंश महाकाव्य में वर्णित गुरू–शिष्य के सम्बध का अध्ययन करना।
2. रघुवंश महाकाव्य में वर्णित शिक्षण विधियों का अध्ययन करना।
3. रघुवंश महाकाव्य में वर्णित पाठ्यक्रम का अध्ययन करना।
4. रघुवंश महाकाव्य में वर्णित अनुशासन का अध्ययन करना।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त शोध विधि : –

प्रस्तुत शोध में तथ्यों के सग्रह में तथ्यों के संग्रह हेतु विवरणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में विषय–वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों एवं सूचनाओं का चयन संदर्भ पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, संस्मरणों आदि में लिखित विवरणों का विश्लेषण करने के पश्चात् किया गया है। शोध प्रक्रिया की दृष्टि से दार्शनिक, विवरणात्मक एवं विवेचनात्मक विषयों पर किये जाने वाले अध्ययन में विधि सर्वथा उपयुक्त तर्कसंगत एवं उतम मानी जाती है। शोध प्रकृति के अनुसार अध्यायों के शीर्षक अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निर्मित किये गये है। और उनसे सम्बन्धित सम्प्रत्यय एवं तथ्यों का संग्रह किया गया है।

निश्कर्श : –

1. प्रस्तुत भाोध में रघुवं ा महाकाव्य के अध्ययन के माध्यम से वर्तमान समय के गुरु – ि ाश्य के संबंधों को सुधारा जा सकता है क्योंकि ज्ञान के साथ साथ ि ाक्षक के नैतिक व चारित्रिक गुण भी अध्यापन के माध्यम से छात्रों को प्रभावित करते है। गुरु – ि ाश्य के संबंधों की प्रगाढता के कारण ही छात्रों को अपने निजी जीवन की कठिनाईयों एवम् समस्याओं का हल करने में सहायता मिल सकेगी।
2. प्रस्तुत भाोध में रघुवं ा महाकाव्य के अध्ययन से यह निश्कर्श निकलता है कि ि ाक्षण में ऐसी विधियों को अपनाना चाहिए जिनमें बालकों को अपने चारों ओर के वातावरण से प्राप्त अनुभवों के आधार पर सीखने का अवसर मिल सके।

3. रघुवं ा महाकाव्य में वर्णित पाठ्यक्रम का अध्ययन करने से हमारा दृश्टिकोण व्यापक बनता है क्योंकि यह महाकाव्य इस प्रकार के पाठ्यक्रम पर बल देता है जो अज्ञानी एवम् अकर्मण्य व्यक्ति को सन्मार्ग पर लाने का प्रयास करे।
4. रघुवं ा महाकाव्य में अनु ाासन पर अत्यधिक बल दिया गया है क्योंकि विद्यार्थियों के कंधों पर राश्ट्र का भविश्य निर्भर है। छात्र यदि अनु ाासन – प्रिय नहीं है तो अध्ययन हितकारी नहीं हो सकता।

उपयोगिता : –

1. प्रस्तुत शोध के माध्यम से समाज के विकास के लिए प्रयुक्त की जाने वाली शिक्षा को रघुवंश महाकाव्य चिन्तन धारा का सम्बल मिलेगा तथा समाज का समुचित विकास सम्भव हो सकेगा।
2. रघुवंश महाकाव्य के समन्वित दर्शन के आधार पर शिक्षक व छात्र संकल्पना को वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मान्यता की जाए तो शिक्षा मानव के स्वाभाविक एवं सर्वांगीण विकास के साथ–साथ जीवन की समस्याओं के समाधान में सहयोगी सिद्व होगी।
3. वर्तमान शिक्षक–छात्र सम्बन्धों में भी रघुवंश महाकाव्य के अनुरूप परिवर्तन उपयोगी सिद्व होगा, क्योकि शिक्षक एवं छात्रों के मध्य तादात्मीकरण व सहयोग से अनुशासन की समस्या का समाधान भी सम्भव है।
4. छात्रों के शैक्षिक जीवन में शिक्षक का महत्वपूर्ण स्थान होता है। अतः शिक्षक को अपने दायित्व को भली–भाँति समझ कर रघुवंश महाकाव्य के शैक्षिक विचारों के अनुरूप स्वार्थ की परिधि से उठकर, कर्तव्य भावना से मुक्त होकर समर्पित भाव से छात्रों को अपने ज्ञान व अनुभव से लाभान्वित कराना चाहिए।

Reference: -

Raghuvaṃśa of Kālidāsa - Edited with extracts & Notes etc by Narayan Ram Acharya Kavyatirtha, Chaukhambha Publishers, Varanasi, 2nd ed (2002), Appendix 2

Raghuvamsa with Hindi Tika_- Jwalaprasad_Mishra

Raghuvamsa of kalidasa by C.R. Devadhar

selected episodes of Raghuvamsam by Kireet Joshi

कालिदास के काव्य में बिम्ब विधान — अवधेष पाण्डेय